B.M.A College, Bahera.

Date - 23/11/2020

B.A. (Hons) -
Paper -
Dept. of Sociology

By: Dr. Rajesh Kumar
Sociology

विषय :- पीढ़ी-अन्तराल

भारत में पीढ़ी-अन्तराल एक नवीन समस्या है। ब्रिटिश आगमन के साथ ही आधुनिक शिक्षा एवं पाश्चात्य संस्कृति का आगमन हुआ। जिससे नवयुवक युवाओं के सोच में कई परिवर्तन आए, परन्तु जीवन प्रत्याशा तब कम थी, जिससे यह गंभीर समस्या उत्पन्न हुई।

लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात आधुनिक शिक्षा, वैज्ञानिक सफलता, युवा क्रांति, जीवन प्रत्याशा में वृद्धि होने के कारण पीढ़ी अन्तराल की समस्या पैदा हुई। समस्याएं यह एक आयु से संबंधित घटना न होकर एक मनोवैज्ञानिक सामाजिक अवस्था है। जिसमें दो पीढ़ी के लोग मूल्यों, विचारों आदि को लेकर समान नहीं सोचते हैं।

पीढ़ी-अन्तराल युवाओं की पीढ़ियों पर आधुनिकीकरण के प्रभाव के परिणाम है जिससे दोनों ही पीढ़ियों के बीच असहज संबंध विकसित हो रहे हैं। मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि इसे कम करने के लिए दोनों पीढ़ियों के बीच संवाद की आवश्यकता है, वही निरंतर प्रयास से पुरानी पीढ़ी के विचारों में यथोचित परिवर्तन ला सकते हैं। पीढ़ी-अन्तराल से दोनों ही पीढ़ियों में नई-नई समस्याएं उत्पन्न हुई और यह समस्या सिर्फ संवाद से ही दूर हो सकती है।

B.M.A College, Baheri Darbhanga

Date - 23/11/2020

B.A (Hons) - III

Paper - V

Deptt of Sociology

By: Dr. Rajesh Kumar
Sociology

विषय :- गोत्र का अर्थ एवं उत्पत्ति

गोत्र से तात्पर्य सामान्यतः काल्पनिक पूर्वजों के समूह से है। अर्थात् "गोत्र एकपक्षीय परिवारों का वह संकलन है जिनके सदस्य अपने को एक काल्पनिक पूर्वज का वंशज मानते है।"

सामान्यतः गोत्र की उत्पत्ति काल्पनिक पूर्वज से मानी जाती है। परंतु यह आवश्यक नहीं है कि वह पूर्वज कोई मानव ही हो। जनजातियों में गोत्र, पशु, पक्षी, पेड़ आदि भी होते है।

हिन्दुओं में गोत्र। द्विज वर्णों मे पाया जाता है। गोत्र की सर्वप्रथम चर्चा शतपथ ब्राह्मण नामक ग्रंथ (800 B.C से 600 B.C) मे मिलती है। गोत्र का अर्थ है - गाय से जन्मा। गोत्र कुल 7 होते है,

कुछ भिन्न प्रकार ~~और~~ यह

- ग्रामदल - इसे गांव में कुनबा या खानदान के नाम से भी जाना जाता है। इसका मतलब यह है जिनकी उत्पत्ति समान ज्ञात पूर्वजों से हुई है, जो चार-पाँच पीढ़ी पहले से एक ही परिवार के सदस्य थे।
- अर्द्धांश - अगर एक जनजाति के गोत्र कुछ हो गये और विभाजित होकर संगठित हो तो उस संगठन को द्विदल संगठन कहते है।
- प्रवर: प्रवर का अर्थ होता है "आह्वान"। यज्ञ के समय तपस्वियों का नाम ही प्रवर है। इस प्रकार यजमान और पुरोहित का एक प्रवर होता है।
- पिंड: हिन्दू धर्म मे पिंड का अर्थ है सामान्य पूर्वज। एवं जो एक ही पितृ को पिंड देते है सपिंड कहलाते है।